9

सच के सिवाय कुछ नहीं

(2 यूहन्ना)

दूसरा यूहन्ना नये नियम की एक अध्याय वाली पुस्तकों में से एक है। आयतों की संख्या के हिसाब से यह पुस्तक पूरी बाइबल में सबसे छोटी है।[1] इसमें केवल तेरह आयतें हैं, जबकि 3 यूहन्ना में 14 और फिलेमोन और यहूदा में पच्चीस-पच्चीस हैं। पुराने नियम में ओबद्याय की पुस्तक में 21 आयतों वाला केवल एक अध्याय है। दूसरा यूहन्ना एक छोटी पुस्तक है, परन्तु इसका संदेश बड़ा है। उस संदेश का सम्बन्ध सच्चाई से है।

अमेरिका की कानूनी अदालतों में गवाहों से सच, पूरा सच, और सच के सिवाय और कुछ नहीं बोलने की शपथ ली जाती है। कलीसियाओं और प्रचारकों को भी सच, पूरा सच और सच के सिवाय कुछ नहीं बोलने का संकल्प लेना चाहिए। इस संसार को सच्चाई से परेशानी है, एक ऐसी दिक्कत जिसका साधन 2 यूहन्ना के संदेश में है।

परेशानी: सच्चाई के लिए लगाव का अभाव

आज मसीहियत में सच्चाई के महत्व को कम करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

दूसरों में

किसी समय अपने धार्मिक पड़ोसियों के साथ अपने मत भेदों पर चर्चा करना सम्भव था पर उसके विपरीत आज विभिन्न धार्मिक समूहों के लोग डॉक्ट्रिन के प्रश्नों के बारे में कम जानते और उसकी कम परवाह करते प्रतीत होते हैं।[2] यदि वे सच्चाई पर विचार करें तो उनका विचार कुछ इस प्रकार हो जाए ''हर किसी के पास अपनी सच्चाई है। आपके पास अपनी सच्चाई है, मेरे पास मेरी सच्चाई है, और दूसरों के पास उनकी सच्चाई है। केवल एक चीज़ जिसका महत्व है वह यह है कि आप अपनी सच्चाई से संतुष्ट हो जाओ।'' पश्चिमी जगत के अधिकतर लोग इस बात से इनकार करते हैं कि पूर्ण सत्य जैसी कोई चीज़ है। (स्पष्टतया, ऐसे लोग केवल एक बात पक्की जानते हैं कि आप किसी भी बात में पूरी तरह सुनिश्चित नहीं हो सकते!)

कलीसिया में

कलीसिया में भी सच्चाई के महत्व पर अर्थात डॉक्ट्रिन पर कम ज़ोर दिया जाता है। कलीसिया के कुछ लोग यह मानने को तैयार नहीं हैं कि पूर्ण सत्य जैसी कोई चीज़ है। प्रभु की कलीसिया के प्रचारकों को सलाह दी जाती है, ''लोगों को बाइबल को न मानने के लिए दोषी मत ठहराओ। आखिर वे अपनी किस्म की सच्चाई को मान रहे हैं। हमारी डॉक्ट्रिन, हमारी सच्चाई, हमारे लिए अच्छी और उनकी सच्चाई उनके लिए अच्छी है।''

यहां तक कि प्रचारकों में भी

इस प्रकार के माहौल में, कई पचारक ''पूर्ण सत्य'' का प्रचारक करने को तैयार नहीं हैं। वे बाइबल की शिक्षा को सीमित करना चाहते हैं, ताकि किसी को ठोकर न लगे। समझौतावादी इन प्रचारकों के उद्धार पाने के ढंग पर बाइबल की आयतों के अपने अनुवाद हो सकते हैं, जो इस प्रकार हैं:

> *यूहन्ना 8:24ख* में–यीशु ने कहा, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।''
>
> *उनका अनुवाद:* ''यह हो सकता है कि यदि तुम यीशु के सम्बन्ध में धर्म शास्त्रीय दृष्टिकोण को यानी यह मान लो कि वह देहधारी परमेश्वर है या उसने यह होने का दावा किया, तो तुम अपने दुष्कर्मों में और उन पर खत्म हो जाओ, या कम से कम यह कि जो यीशु कहता है।''
>
> *लूका 13:3*–यीशु ने कहा, ''मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।''
>
> *उनका अनुवाद:* ''यह लगेगा कि मन फिराने से इनकार करने वाला व्यक्ति युगावंत विज्ञान के गम्भीर परिणामों के खतरे में, चाहे यह बेशक विशेष परिस्थितियों में लागू न हो।''
>
> *मरकुस 16:16*–यीशु ने कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।''
>
> *उनका अनुवाद:* ''जो किसी हद तक विश्वास करता और बपतिस्मा देता है यदि वह ऐसा करना चुने, उद्धार पाएगा, या कम से कम श्रापित नहीं होगा। जो विश्वास नहीं करता, सांकेतिक रूप में कहें तो वह दोषी ठहराया जाएगा, जब तक उसके पास विश्वास करने का अच्छा बहाना न हो।''

यह प्रचारक प्रेम, अनुग्रह, मसीही व्यवहारों और भलाई करने पर ज़ोर दे सकते हैं। तौभी उन्हें प्रचार करने और सत्य की शिक्षा देने तथा झूठी शिक्षा को नकारने के महत्व अर्थात अन्य शब्दों में कहें, तो सच्चाई, पूर्ण सच्चाई और सच्चाई के सिवाय और कुछ नहीं का प्रचार करने को भूलना नहीं चाहिए!

समाधान: 2 यूहन्ना

दूसरा यूहन्ना सच्चाई के महत्व पर ज़ोर देता है। प्रेरित ने लिखा है:

> [1] मुझे प्राचीन की ओर से उस चुनी हुई श्रीमति और उसके लड़के वालों के नाम जिन से मैं उस सच्चाई के कारण सत्य प्रेम रखता हूं, जो हम में स्थिर रहती है, और सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगी। [2] और केवल मैं ही नहीं, बरन वह सब भी प्रेम रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं। [3] परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह,

और दया, और शान्ति, और सत्य, और प्रेम सहित हमारे साथ रहेंगे।

[4]मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैंने तेरे कितने लड़के-बालों को उस आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी सत्य पर चलते हुए पाया। [5]अब हे श्रीमति, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से हमारे पास है, लिखता हूं; और तुझ से बिनती करता हूं, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें। [6]और प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह वह आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए।

[7]क्योंकि बहुत से ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया: भरमाने वाला और मसीह का विरोधी यह है। [8]अपने विषय में चौकस रहो; कि जो परिश्रम हमने किया है, उसको तुम न बिगाड़ो: बरन उसका पूरा प्रतिफल पाओ। [9]जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। [10]यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। [11]क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामों में साझी होता है।

[12]मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और सियाही से लिखना नहीं चाहता; पर आशा है, कि मैं तुम्हारे पास आऊंगा, और सम्मुख होकर बातचीत करूंगा: जिससे तुम्हारा आनन्द पूरा हो।

[13]तेरी चुनी हुई बहिन के लड़के वाले तुझे नमस्कार करते हैं।

यह तीन शब्द इस पुस्तक में अधिकतर पाए जाते हैं। (1) ''सच्चाई'' शब्द पहली चार आयतों में पांच बार आता है। (2) चार से छह आयतों में ''आज्ञा(एं)'' चार बार आता है। (3) 9 से 10 आयतों में ''शिक्षा'' (डॉक्ट्रिन; KJV) शब्द तीन बार इस्तेमाल हुआ है। फिर पत्र में हम ''सच्चाई,'' ''आज्ञा,'' या ''शिक्षा'' की अवधारणा बारह बार पाते हैं। तीनों शब्द सही शिक्षा के महत्व पर ज़ोर देते हैं। यह पुस्तक तीन चुनौतियां देती हैं जो मसीही जीवन के लिए लक्ष्य बताते हैं।

सच्चाई में चलने की चुनौती

अभिवादन के अनुसार, यह पत्र ''प्राचीन'' के द्वारा लिखा गया था। यह सम्भवतया प्रेरित यूहन्ना को ही कहा गया है। उसने अपने आपको अपनी उम्र और अधिकार पर ज़ोर देने के लिए इस प्रकार से दिखाया होगा। यह पत्र ''चुनी हुई श्रीमति और उसके लड़के-बालों के नाम'' है (2 यूहन्ना 1)। यह किसी विशेष मसीही स्त्री या उसके बच्चों के लिए हो सकता है पर यह सम्भावना अधिक है कि वह ''चुनी हुई श्रीमति'' मण्डली थी और ''उसके लड़के-बाले'' उस मण्डली के लोग थे।[3] ''चुनी हुई श्रीमती'' कोई स्त्री थी या कलीसिया, इस पत्री की शिक्षा में कोई फर्क नहीं पड़ता। महत्व इस बात का है कि इसके प्राप्तकर्त्ताओं का सम्बन्ध सच्चाई से हो।

ध्यान दें कि यूहन्ना ने उनके और सच्चाई के बारे में क्या कहा: (1) यूहन्ना उन से ''सच्चा'' प्रेम रखता था (आयत 1)। (2) सच्चाई को जानने वाले दूसरे लोग उन से प्रेम रखते थे (आयत

1)। (3) यूहन्ना ने ''सत्य और प्रेम'' में पिता और पुत्र दोनों की ओर से सलाम भेजा (आयत 3)। (4) यूहन्ना आनन्दित था क्योंकि चुनी हुई श्रीमति के कुछ बच्चे ''सत्य पर चल रहे'' थे (आयत 4)।[4] एक ऐसा वाक्य जो यह सुझाव भी दे सकता है कि कुछ नहीं चल रहे थे।

''सत्य पर चलने'' का क्या अर्थ है? यीशु ने अपने आपको ''सत्य'' कहा (यूहन्ना 14:6), परन्तु यहां ''सत्य'' उस शिक्षा को कहा गया होना चाहिए जो यीशु की ओर से और परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए उन लोगों की ओर से मिली जिन्हें उसने भेजा था। अपने चेलों के सम्बन्ध में यीशु ने अपने पिता से प्रार्थना की, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। इसलिए ''सत्य पर चलने'' का अर्थ परमेश्वर के वचन को मानना है। ''सत्य पर चलना'' केवल परमेश्वर को जानने या परमेश्वर के वचन को मानने से कहीं बढ़कर है; इसका अर्थ इसके द्वारा जीना, इसकी आज्ञा मानना और इसके अनुसार आराधना करना है।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि सत्य पर चलना आवश्यक है। आपकी आशा और उद्देश्य क्या है? आप अपने परिवार के लिए क्या चाहते हैं? कलीसिया में अपने भाइयों और बहनों के लिए आपकी क्या इच्छा है। क्या यह इच्छा यह नहीं होनी चाहिए कि आप और वे ''सत्य पर चल'' सकें? *हमारा लक्ष्य सत्य पर चलना होना चाहिए।* यदि हम ''सत्य पर चल रहे हैं'' तो हमारे प्रियजन ''सत्य पर चल रहे'' हैं और हमारे साथी मसीही ''सत्य पर चल रहे'' हैं तो यूहन्ना की तरह ही हमारे पास आनन्द करने और ''बहुत आनन्दित'' (2 यूहन्ना 4) होने का कारण है।

आज्ञाओं को मानने की चुनौती

''चुनी हुई श्रीमति'' के कुछ बच्चों को ''सत्य पर चल'' पाने की यूहन्ना ने उन से विनती की जिनके नाम वह लिख रहा था:

> अब हे श्रीमति, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से हमारे पास है, लिखता हूं; और तुझ से बिनती करता हूं, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें (2 यूहन्ना 5)।

यूहन्ना ने अपने पाठकों से एक-दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा को मानने का आग्रह किया। यह आज्ञा नई नहीं थी क्योंकि यीशु ने स्वयं इसे दिया था (यूहन्ना 13:34, 35)। इन भाइयों को मसीही बनने के समय से ही इसका महत्व सिखाया गया था।

यूहन्ना ने गश्ती पत्र के तर्क का इस्तेमाल करते हुए एक दूसरे से प्रेम रखने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया:

> और प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह वह आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए (2 यूहन्ना 6)।

यदि हमें यूहन्ना से पूछना हो कि ''प्रेम क्या है?'' तो वह हमें उत्तर देगा, ''आज्ञाओं के अनुसार चलना।'' तो यदि हमें उससे यह पूछना हो, ''परन्तु आज्ञा क्या है?'' तो वह उत्तर देता, ''एक दूसरे से प्रेम करना।'' यूहन्ना का गश्ती पत्र में तर्क एक दूसरे से प्रेम रखने की पूरी आवश्यकता पर ज़ोर देता है।

अधिकतर लोग एक-दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा को यूहन्ना की बात को सराहेंगे। परन्तु कइयों को लगता है कि एक दूसरे से प्रेम रखना ही काफ़ी है। डॉक्ट्रिन की शिक्षा देना उन्हें आवश्यक नहीं लगता; उनके लिए जब तक सब एक दूसरे से प्रेम करते हैं तब तक इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे क्या सिखाते या विश्वास करते हैं। निश्चित रूप में एक दूसरे से प्रेम रखना आवश्यक है, क्या प्रेम रखने की आज्ञा ही सब कुछ है?

आयत 6 से सुझाव मिल सकता है कि एक-दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा के साथ साथ अन्य महत्वपूर्ण आज्ञाएं भी हैं, क्योंकि यह कहती है कि हमें ''उसकी *आज्ञाओं* के अनुसार'' चलना आवश्यक है, जो कि बहुवचन में है। ''एक-दूसरे से प्रेम रखना'' केवल एक आज्ञा है। जबकि और आज्ञाएं भी हैं जिनका पालन करना आवश्यक है। अगली आयत ''भरमाने वालों और मसीह के विरोधी'' की बात करती है।[5] कुछ लोग झूठे शिक्षक थे और मसीही लोगों को उन से चौकस रहने की आवश्यकता थी। जिसका परिणाम यह हुआ कि एक-दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा ही मसीहियत की एक आज्ञा नहीं है। वास्तव में डॉक्ट्रिन का महत्व एक दूसरे से प्रेम रखन से जुड़ा है। गलत डॉक्ट्रिन सिखाने, या गलत सिखाने वालों को स्वीकार करने का अर्थ दूसरों के प्राण अनन्त खतरे में डालकर उनके लिए प्रेम की कमी को दिखाना है।

इसलिए जीवन में मसीही व्यक्ति के लक्ष्य के बारे में जो कुछ कहा गया है हमें उसमें कुछ जोड़ना है: मसीही व्यक्ति का लक्ष्य *आज्ञाओं को मानकर* सत्य पर चलना होना चाहिए।[6]

कौन सी आज्ञाएं? स्पष्ट है कि हमें एक-दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है। इसके अलावा हमें परमेश्वर की सही आज्ञाओं को मानने की पूरी कोशिश करने की आवश्यकता है जो आज हमारे लिए हैं। जीवन में हमारे लक्ष्य अलग-अलग होने के बावजूद हमारा पहला लक्ष्य आज्ञाओं को मानना अर्थात परमेश्वर की इच्छा को पूरा होना चाहिए!

मसीह की शिक्षा या डॉक्ट्रिन बनने की चुनौती

> क्योंकि बहुत से ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया: भरमाने वाला और मसीह का विरोधी यह है (2 यूहन्ना 7)।

यूहन्ना ने इन भाइयों से आज्ञाओं को मानने का आग्रह क्यों किया? क्योंकि ''बहुत से ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आए हैं'' (2 यूहन्ना 7क)। ये लोग क्या सिखा रहे थे? यह कि यीशु मसीह शरीर में होकर नहीं आया था (2 यूहन्ना 7ख)[7]।

इसके आगे, यूहन्ना ने संकेत दिया कि यदि वे भरमाने वालों या झूठे शिक्षकों से सावधान नहीं होते हैं तो वे उसे खो सकते हैं जिसके लिए उन्होंने काम किया था, यानी वे अपना प्रतिफल खो सकते है (2 यूहन्ना 8)। इन मसीही लोगों ने प्रभु की सेवा बड़ी ईमानदारी से की थी और सताए जाने के बावजूद वे उसके प्रति वफ़ादार बने रहे होंगे। यदि अब वे झूठे शिक्षकों द्वारा भरमाए जाते हैं, तो वे अपनी ईमानदारी के ईमान से हाथ धो सकते थे। अन्य शब्दों में वे खो जाते।

वे भरमाए जाने से कैसे बच सकते थे? यह समझकर कि मसीह की शिक्षा में बने रहना कितनी गम्भीर बात है। दो तथ्यों से सुझाव मिलता है कि मसीह की शिक्षा में बने रहना कितना

महत्वपूर्ण है।

हमें परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध की रखवाली रखना आवश्यक है (2 यूहन्ना 9)

पहली बात तो यह है कि मसीह की शिक्षा में बने रहना इतनी गम्भीर बात है कि यह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को प्रभावित करता है। यूहन्ना ने कहा कि ''जो कोई आगे बढ़ जाता है,[8] और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पस पिता भी है, और पुत्र भी'' (2 यूहन्ना 9)।[9] ''मसीह की शिक्षा'' बने रहना इतना आवश्यक है कि जो कोई इस में बना नहीं रहता उसके पास परमेश्वर नहीं है-यानी परमेश्वर के साथ उसकी संगति नहीं है।

यह ''मसीह की शिक्षा'' क्या है जिसमें हमें बने रहना आवश्यक है ? कइयों का मानना है कि यह मसीह के बारे में सही विश्वास से बनती है यानी यह कि वह परमेश्वर का पुत्र अर्थात देहधारी हुआ परमेश्वर, वचन देहधारी हुआ, यानी एक समय में परमेश्वर और मनुष्य दोनों हैं।[10] परन्तु यह सम्भावना है कि ''मसीह की शिक्षा'' में मसीह से जुड़े तथ्य तो हैं ही, इसमें वह पूरी शिक्षा भी है जो मसीह से मिली। बेशक यूहन्ना के कहने का अर्थ वह सारी सच्चाई थी जो मसीह की ओर से मिली और उसके चेलों द्वारा आरम्भिक कलीसिया के लोगों को दी गई।[11] अन्य शब्दों में ''मसीह की शिक्षा'' में मसीही धर्म की सभी आवश्यक बातें होंगे जो नये नियम में मिलती हैं। यदि हम उस शिक्षा में बने नहीं रहते, तो हम परमेश्वर के साथ संगति को गंवा देंगे।

हम झूठे शिक्षकों का समर्थन न करें

दूसरा, ''मसीह की शिक्षा'' में बने रहना इतना गम्भीर है कि हमें चाहिए कि झूठे शिक्षकों का समर्थन न करें। यूहन्ना ने लिखा:

> यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामों में साझी होता है (2 यूहन्ना 10, 11)।

यूहन्ना ने लिखा: यूहन्ना के पाठकों ने इस शिक्षा को अपने लिए कैसे लागू किया होगा ? आरम्भिक कलीसिया में सुसमाचार प्रचारकों को प्रचार करने के लिए स्थानीय कलीसियाओं द्वारा भेजा जाता था। वे एक मण्डली से दूसरी मण्डली में अपने साथ प्रेरितों का संदेश लेकर जाते थे। एक से दूसरी जगह जाने पर भाइयों के पास ठहरते जो उनके आगे जाने के लिए धन और सामान उनका सत्कार करते और देते। अपनी तीसरी पत्री में यूहन्ना ने विश्वासी मसीही लोगों को इन घूमने वाले सुसमाचार प्रचारकों को सहायता करने के लिए समझाया। उसने कहा कि इन कर्मियों को सहाता करते, भाई लोग उनके साथ संगी कर्मी बन गए (3 यूहन्ना 8)।

मसीह के उन विश्वासयोग्य दूतों के साथ, जो खरी शिक्षा लेकर आए थे, झूठे शिक्षक भी विश्वासी लोगों के आस पास गए थे। बेशक उन्होंने अपने आप झूठे शिक्षकों के रूप में प्रचारित नहीं किया और उन्होंने यह सोचा भी नहीं होगा कि वे झूठे शिक्षक हैं। तौभी वे झूठे शिक्षक या ''भरमाने वाले'' थे क्योंकि इस बात से इनकार करते थे कि यीशु मसीह देह में होकर आया

(2 यूहन्ना 7)। ये झूठे शिक्षक मसीही लोगों और कलीसियाओं का समर्थन वैसे ही जैसे सच्चाई का प्रचार करने वाले चाहते थे।

एक अर्थ में यूहन्ना का संदेश था, ''ऐसे व्यक्ति का आतिथ्य सत्कार न करो! उसे अपने घर में मत रोको!'' हम झूठे शिक्षक को ''सलाम'' न दें।[12] यानी झूठे शिक्षक को फैलाने या उसके सहायता के लिए कुछ न करें। यदि यूहन्ना यह पत्र किसी मण्डली को लिख रहा था, तो संदेश भी सुझाव देता है कि ऐसे लोगों को मण्डली द्वारा शिक्षकों को ग्रहण करने या उनका समर्थन न किया जाए।

क्यों नहीं? क्योंकि जो ऐसे शिक्षक की सहायता करता है वह ''उसके बुरे कामों में साझी होता है'' (2 यूहन्ना 11)। झूठा शिक्षक आत्माओं के खोने का जिम्मदोर है! न्याय दिलाने के दिन यह कितनी बड़ी त्रासदी होगी। यदि हम किसी को यह कहते सुनें, ''मैं खो गया क्योंकि आपने झूठे शिक्षक का समर्थन किया! मैंने उस पर विश्वास कर लिया और मैं खो गया''!

आज शिक्षा। हम और आप ऐसे शिक्षकों कैसे लागू कर सकते हैं? निश्चित रूप में किसी व्यक्ति को जिसे हम जानते हैं, मिलने पर ''हैलो'' कहने से इनकार करने की आवश्यकता नहीं है। न यह गलत शिक्षा देने वाले को ठण्डे पानी का गिलास देकर परोपकार करने से रोकता है; यह हमें गलत शिक्षा देने वाले से मिलने से रोकता नहीं है कि हम उसे ''परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक-ठाक'' बताए (प्रेरितों 18:26)।

परन्तु यूहन्ना की शिक्षा हमसे यह कहकर सुनिश्चित करने की कोशिश करने की मांग करती है कि स्थानीय मण्डली में प्रचार करने और सिखाने की अनुमति केवल उन्हीं लोगों को दी जाए जो सच्चाई की शिक्षा देते हैं। हमें इस शिक्षा को व्यक्तिगत रूप से लेना चाहिए।

निजी तौर पर मैं उन लोगों की सहायता करने की मंशा नहीं रखता जो गलत शिक्षा को फैला रहे हैं। जब कोई व्यक्ति डिनोमिनेशन के विचारों या साहित्य के फैलाने के लिए मेरे घर आता है तो मैं उससे बात करूंगा। यदि उसे प्यास लगी है तो मैं उसे पानी पिलाऊंगा। यदि मुझे लगे कि मैं उसे बदल सकता हूं तो उसे समझाने की कोशिश करते हुए उसे घर में बुलाऊंगा। परन्तु उसके काम को पूरा करने में सहायता करने के लिए कुछ करने से मैं इनकार दूंगा। उदाहरण के लिए उससे जिसे मैं गलत शिक्षा देने वाला मानता हूं, वह सामग्री ले लूंगा, पर मैं उस सामग्री के लिए पैसे या काम के लिए चंदा नहीं दूंगा। इसी प्रकार से हर मसीही को गलत शिक्षा को फैलाने में सहयोग न करने का संकल्प लेना चाहिए।

हम समाधान का भाग हों।

10 और 11 आयतों में यूहन्ना के शब्दों में मसीही जीवन के सबसे बड़े खतरों में से एक झूठी शिक्षा के खतरे का समाधान है। झूठी शिक्षा एक वास्तविक खतरा है। और नये नियम की मसीहियत हमें इसमें बचाव की लगातार चुनौती देती है।[13] यह समाधान दोहरा है: (1) हम मसीह की शिक्षा में बने रहें और (2) यह सुनिश्चित करें कि हम उनको सहयोग या प्रोत्साहन नहीं देंगे जो झूठी शिक्षा को फैलाते हैं। *मसीही होने के नाते हमारा लक्ष्य मसीह की आज्ञाओं को मानते हुए और उसकी शिक्षा में बने रहकर सच्चाई पर चलना चाहिए।*

सारांश

सच्चाई का प्रचार करना मसीहियत का एक ही महत्वपूर्ण भाग नहीं है। हमारे लिए अपनी शिक्षा को जीना; प्रार्थना बाइबल अध्ययन के द्वारा प्रतिदिन परमेश्वर और साथ की चाह करना: और जहां तक अवसर मिले अपने पड़ोसियों से प्रेम रखने और हर किसी के साथ भला करना चाहिए (गलातियों 6:10)। बाइबल में परमेश्वर के वचन की शिक्षा को माने बिना केवल इसे जानने और विश्वास करने के विरोध में ढेरों चेतावनियां हैं।[14] और यह उन्हें पूरी तरह से दोषी ठहराती हैं, जो धार्मिक कर्मकाण्डों में परमेश्वर की आराधना में लगे रहते हैं, पर अन्य लोगों से दुर्व्यवहार करना भी नहीं छोड़ते।[15]

तौ भी सच्चाई की शिक्षा देना ही महत्वपूर्ण नहीं है, यह तो अत्यन्त आवश्यक है! जो लोग यह प्रस्ताव देते हैं कि हम डॉक्ट्रिन के विषयों पर सिखाने की बजाय अनुग्रह और प्रेम की शिक्षा दें, वे गलत विभाजन बनाने के दोषी हैं। ऐसा लगता है जैसे वे कह रहे हों कि हमें डॉक्ट्रिन पर प्रचार करने और मसीही जीवन पर प्रचार करने में से एक को चुनना होगा। पर हम या तो एक को चुन सकते हैं या दूसरा, दोनों को नहीं। मसीही लोगों को ''या यह/यह वह'' वाली स्थिति का सामना नहीं करना है; हम दोनों कह सकते हैं! हम डॉक्ट्रिन के विषयों पर सच्चाई का प्रचार कर सकते हैं और हमें करना चाहिए *और* मसीही लोगों को प्रेम और पवित्रता से जीवन बिताना सिखा सकते हैं और सिखाना चाहिए! हमें प्रचार करने के अपने एजेंडे को बनाने में यूहन्ना को हमारी सहायता करने की अनुमति देनी चाहिए। उसने कहा, ''अनुग्रह, और दया, और शान्ति, और सत्य, और प्रेम सहित हमारे साथ रहेंगे'' (2 यूहन्ना 3)। सत्य *और* प्रेम *दोनों* ही आवश्यक हैं! रिचर्ड पेञ्चटल ने लिखा:

> कई बार ध्यान हट जाना सम्भव हो तो है। प्रेम के लिए सम्मान के बिना सच्चाई पर इतना ज़ोर देना सम्भव हो सकता है कि हम कठोर, दृढ़ और [लड़ते हुए], लोगों को प्रभु से दूर करने वाले बन जाएं। परन्तु दूसरी ओर प्रेम, क्षमा और स्वीकृति के बारे में हम अपने व्यहार को इतना विकसित कर सकते हैं कि जो हमें अपने व्यवहार को इतना विकसित कर सकते हैं जो हमें उसके लिए खड़े होने से दूर करते हैं जो सत्य है। हमें दोनों ही चरमों से बचना चाहिए और सच्चाई को प्रेम में व्यवहार में लाना चाहिए।[16]

हमारे लिए सच्चाई का प्रचार करना और उसे सिखाना कितना आवश्यक है? हमारे वर्तमान कानूनी प्रबन्धों में ''सत्य, पूरा सच, और वर्तमान सर्च के सिवाए और कुछ नहीं'' बताने में नाकाम रहने वाले को झूठी गवाही का दोषी माना जा सकता है, जो कि एक गम्भीर अपराध है। आइए हम धार्मिक झूठी गवाही के दोषी न हों; आइए हम ''सच के सिवाए और कुछ नहीं'' सिखाएं।

टिप्पणियां

[1]यूनानी धर्मशास्त्र में 2 यूहन्ना से लगभग एक पंक्ति छोटी होने के कारण, 3 यूहन्ना वास्तव में छोटा है। (हेनरी क्लेरेंस थियसन, *इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1943], 313.) [2]''डाक्ट्रिन'' शब्द का इस्तेमाल कलीसिया, उद्धार की योजना, और आराधना जैसे विषयों के

लिए इस्तेमाल किया गया है। नये नियम में ''डाक्ट्रिन'' केवल ''शिक्षा'' को कहा गया है, चाहे यह ऐसे विषयों पर सिखाने के लिए हो या मसीही जीवन, विवाह, घर, या किया भी और बात की। [3]यह मानने वालों में कि ''चुनी हुई श्रीमति'' कोई स्त्री थी गाइ एन. वुड्स, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल ऑफ़ पीटर, जॉन एंड ज्यूड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1983), 338–39 हैं। यह मानने वालों में कि यह कोई मण्डली थी थॉमस एफ. जॉनसन, *1, 2, और 3 यूहन्ना,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 147, और जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *दि लेटर्स टू जॉन,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968), 150 हैं। इसके अलावा यदि ''चुनी हुई श्रीमति'' कोई मण्डली थी, तो अन्तिम सलाम (आयत 13) किसी और मण्डली का है। [4]तुलना करें 3 यूहन्ना 3, जहां गयुस के ''सच्चाई में चलने'' की बात कही गई है। [5]''मसीह का विरोधी'' का अर्थ ''मसीह के विरुद्ध'' है। यह वह शब्द है जो नये नियम में पांच बार, केवल यूहन्ना के लेखों में मिलता है (1 यूहन्ना 2:18 [दो बार, एक बार बहुवचन रूप में], 22; 4:3; 2 यूहन्ना 7)। इसका अर्थ है ''जो मसीह का विरोध करता है, शत्रु या विपक्षी'' (नोयल मेरिडेथ, ''फाल्स टीचर्स एण्ड हाऊ टू डील विद देम,'' *डेंटन लेक्चर्स* [1987], 287)। [6]''आज्ञाओं पर चलने'' या मसीही की आज्ञा मानने के महत्व पर मत्ती 7:21; यूहन्ना 14:15, 21; 15:10; 1 यूहन्ना 2:4, 5; 3:22 जैसी आयतों में ज़ोर दिया गया है। [7]यह झूठी शिक्षा 1 यूहन्ना 2:18–22 में भी मिलती है। स्पष्टतया इसमें ''अध्यात्म ज्ञान'' के नाम से प्रसिद्ध पाखण्ड के एक आरम्भिक रूप को दिखाता है, जो सिखाता था कि हर शारीरिक या भौतिक चीज़ बुरी है। सोच के इस ढंग के अनुसार परमेश्वर वास्तव में मनुष्य के रूप में नहीं हो सकता था। इस पाखण्ड का एक संस्करण यह कहता है कि मसीह केवल शरीर लगा, या दिखाई दिया, पर वास्तव में उसमें मांस और हड्डियां नहीं थीं। [8]KJV का ''अपराध'' एक निम्न यूनानी धर्मशास्त्र में पाए जाने वाले अलग शद्बद का अनुवाद है। NIV में ''आगे भागता है'' और NRSV में इस आयत का अनुवाद ''हर कोई जो मसीह की शिक्षा में बना रहता है, बल्कि इससे आगे निकल जाता है'' है। NAB में ''कोई भी जो इतना 'प्रगतिशील' है कि वह मसीह की शिक्षा में बना नहीं रह सकता'' है। [9]''यहां विचाराधीन पाप की किस्म वह है कि जिसमें कोई मसीही की शिक्षा के आगे प्रगति कर रहा है: वह मसीह की शिक्षा में बना नहीं है'' (मेरिडेथ, 270)। [10]''आप के पास आने वालों की परीक्षा के लिए वे यह शिक्षा लाते हैं, ''... कि मसीह वास्तव में देह में होकर आया या नहीं'' (जॉनसन, 158)।

[11]एक ही टीकाकार ने लिखा कि ''मसीह की डॉक्ट्रिन ['शिक्षा'; NASB] (KJV) वह शिक्षा है 'जो मसीह ने दी और उसने पहले इसे स्वयं दिया और फिर अपने चेलों के द्वारा' [इब्रानियों 2:3] ...नये नियम का इसका उपयोग हर जगह इसके पक्ष में है'' (ब्रूक फोस वेस्टकॉट, *दि एपिस्टल ऑफ़ सेंट जॉन* [लंदन: विलियम क्लॉस एंड सन्स, 1883; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1966], 230). जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने कहा कि ''अधिकतर टीकाकारों'' का मानना है कि ''मसीह की डॉक्ट्रिन'' का अर्थ ''वह शिक्षा है, जो मसीह ने सिखाई,'' परन्तु उसने माना कि इसका और ''मसीह के बारे में शिक्षा'' भी हो सकता है (रॉबर्ट्स, 163–64)। [12]NASB के अनुवादित शब्दों ''नमस्कार करने'' (आयत 10) का अुवाद KJV में ''उसे परमेश्वर की आशीष दो'' और NIV में ''उसका स्वागत करो'' है। जॉनसन ने कहा कि यह अभिव्यक्ति ''केवल अभिवादन से अधिक का संकेत देती है कि क्योंकि इसमें उन लोगों के मिशन में सहयोग देना और सहायता करना, जिन्होंने समाज को बांट दिया'' (जॉनसन, 159)। [13]मत्ती 7:15; 24:24; प्रेरितों 20:29, 30; 1 तीमुथियुस 4:1, 2; 2 तीमुथियुस 4:1–4; 2 पतरस 2:1; 1 यूहन्ना 2:18; 4:1; यहूदा 4. [14]मत्ती 7:21–27; याकूब 1:22–25; 2:14–17. [15]देखें यशायाह 1:10–17; मलाकी 6:6–8; मत्ती 23:14, 23–28. [16]रिचर्ड पेटल, ''लव इन द ट्रुथ,'' *दि प्रीचर'स पीरियोडिकल* (नवंबर 1985): 14.